

संबंध बनाना चाहती है लेकिन वहाँ वह गलत ठहराई जाती है। यह केवल मित्रो की ही नहीं बल्कि कई ऐसी स्त्रियाँ हैं जो अपने पति से अतृप्तता की मांग करती हैं। मित्रो अन्य बहुओं की तरह घूँघट की चिंता नहीं करती। उसकी नज़रें न कभी झुकती हैं और न ही वह किसी से डरकर रहती है। कभी अपने ननद जनको से काम सम्बन्धों की बात करती है तो कभी जेठानी 'सुहागवती' से तो वहीं जेठ 'बनवारीलाल' को तिरछे नज़रों से छेड़ते हुए कहना "जेठ जी अपनी जिठानी के तुल तो मैं कहाँ पर एक नज़र इधर भी।" अपनी शारीरिक इच्छा की मांग करती हुई 'मित्रो' कहती है "देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता। बहुत हुआ हफ्तों, पखवाड़े और मेरी देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास की मछली सी तड़पती हूँ।" मित्रो पहली ऐसी नारी है जो अपनी काम अनुभूति की व्यापक एवं निसंकोच ललक का उद्घाटन करती है। समाज जिसे कुकर्म, अधर्म मानता है मित्रो उसे कुकर्म नहीं मानती।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लेखिका ने नारी जीवन की तमाम समस्याओं को इस उपन्यास में चित्रित किया है। उनकी नारी किसी कल्पनालोक से उतरी नारी नहीं है बल्कि इसी दुनिया की इसी समाज की सताई हुई नारियाँ हैं। 'सोबती' अपने मार्ग का स्वयं निर्माण करके उस पर चलने में विश्वास रखती है तभी तो 'मित्रो', 'धनवती', 'बालो', 'फूलावती' जैसी पात्र को इस उपन्यास में लायी है। वह न किसी को पछारने की बात रखती है और न ही उसके अनुकूल होने की उन्होंने तो बस अपने बेबाक व्यक्तित्व के जरिये पितृसत्तात्मकता को तोड़ने का प्रयास किया है। उन्होंने इस उपन्यास के जरिये नारी की विभिन्न समस्याओं को बेबाक और निर्भीक ढंग से प्रस्तुत किया है। अतः हम कह सकते हैं कि 'कृष्णा सोबती' ने अपनी नायिकाओं का एक अस्तित्व स्थापित किया और उसे उसके व्यक्तित्व से परिचित कराया। आज की नारी पुरुष का अत्याचार सहन नहीं करती बल्कि उसका विरोध करती है। नारी का समाज में एक व्यक्ति के रूप में स्थापित करना लेखिका का एकमात्र उद्देश्य है और अपने इस उद्देश्य में उन्हें कामियाबी भी मिली। उनकी नारी आज सामाजिक व्यवस्था के साथ संघर्ष करके, मुक्ति की ओर अग्रसर होकर अपनी स्वतंत्रता का ऐलान करती है और समय के साथ परिवर्तित चेतना का परिचय देती है।

संदर्भ :-

1. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, पृ.-87.
2. अंतरेडूडी डॉ. सुलोचना, कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिम्बित नारी जीवन, पृ.-133.
3. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, पृ.-97.
4. खेतान प्रभा, स्त्री: उपेक्षिता, पृ.-248.
5. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, पृ.-75.
6. वहीं, पृ.-75.
7. वहीं, पृ.-66.
8. राठोड डॉ. शंकर ए. , कृष्णा सोबती: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.-66.
9. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, पृ.-67.
10. वहीं, पृ.-36.
11. बहुखंडी डॉ. सरिता, आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य, पृ.-135.
12. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, पृ.-34.
13. वहीं, पृ. 11.
14. वहीं, पृ.-33.
15. वहीं, पृ.-35.
16. वहीं, पृ.-29.
17. बासमंह डॉ. शहनाज जाफ़र, कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ, पृ.-230.
18. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, पृ.-12.
19. वहीं, पृ.-13.
20. बहुखंडी डॉ. सरिता, आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य, पृ.-134.
21. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, पृ.-10.
22. वहीं, पृ.-22.
23. वहीं, पृ.-19.
24. वहीं, पृ.-20.

गूजरी महल संग्रहालय ग्वालियर सामान्य परिचय

डॉ. गोविन्द बाथम

सहायक प्राध्यापक इतिहास
शासकीय महाविद्यालय माड़ा, जिला-सिंगरौली (म.प्र.)

गूजरी महल संग्रहालय राज्य शासन के पुरतत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग के छह प्रमुख संग्रहालयों में से एक है। पुरावशेषों के संग्रह की दृष्टि से इस संग्रहालय की गिनती देश के कुछ गिने चुने प्रमुख एवं अग्रणी संग्रहालयों में की जाती है।

सन् 1913 ई. में ग्वालियर राज्य के तत्कालीन महाराजा माधव राव सिंधिया ने पुरातत्व विभाग का गठन कर स्व.श्री एम.बी. गर्दे को इसका मुख्य नियुक्त किया तथा ग्वालियर में एक संग्रहालय स्थापित करने का निर्णय भी लिया। सन् 1920 ई. में संग्रहालय की स्थापना के लिये गूजरी महल स्थानीय पुरातत्व विभाग को सौंप दिया गया। संग्रहालय के लिये राज्य भर से पुरावशेषों का संग्रह किया गया। सन् 1922 ई. में संग्रहालय का विधिवत उद्घाटन किया गया। स्थापना से आज तक संग्रहालय ने विकास के कई सोपान पार किये हैं। नवीन दीर्घाओं का निर्माण किया गया है।

संग्रहालय में एक ग्रन्थालय है जिसमें पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, धर्म एवं दर्शन से संबंधित चार हजार ग्रन्थ हैं। विद्वान एवं शोधार्थी ग्रन्थालय में बैठकर ग्रंथों का अध्ययन कर सकते हैं। संग्रहालय में एक विक्रय पटल (म्यूजियम शॉप) भी है, जिसमें विभाग द्वारा तैयार की गई पुरावशेषों की प्रतिकृतियां एवं विभागीय प्रकाशन विक्रय हेतु उपलब्ध है। दर्शकों, पर्यटकों की सुविधा के लिये विभाग द्वारा संग्रहालय में मार्गदर्शक की सेवाएं भी उपलब्ध है।

गूजरी महल किले के पूर्वी रास्ते पर बादलगढ़ दरवाजे के समीप स्थित है। रेल्वे स्टेशन एवं बस स्टैंड से गूजरी महल संग्रहालय की दूरी लगभग 4 कि.मी. है। गूजरी महल जाने के लिये टैक्सी, टैम्पो एवं ऑटो की सुविधा उपलब्ध है।

संग्रहालय सोमवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़कर प्रतिदिन प्रातः दस बजे से सायं 5 बजे तक खुला रहता है। संग्रहालय में बीस रूपये भारतीय तथा दो सौ रूपये प्रवेश शुल्क विदेशियों के लिए है।
गूजरी महल:- संग्रहालय के लिये चुना गया गूजरी महल अपने आप में ही एक दर्शनीय स्मारक है। स्थापत्य एवं अलंकरण की दृष्टि से यह महल ग्वालियर के किले का दूसरी महत्वपूर्ण महल है। गूजरी महल का निर्माण राजा मानसिंह ने अपनी सर्वाधिक प्रिय रानी मृगनयनी के रहने के लिये कराया था। मृगनयनी गूजर वंश में पैदा हुई थीं इसलिये इस महल का नाम गूजरी महल पड़ गया। राई गांव में रहने वाली गूजर कन्या निन्नी के नयन मृग के समान अत्यन्त सुंदर थे इसलिये राजा ने उसे मृगनयनी का संबोधन दिया।

एक रोचक प्रसंग के अनुसार एक बार राजा मानसिंह राई गांव के पास शिकार खेलने गये वहां उन्होंने एक रूपवती कन्या को अपनी बलिष्ठ बांहों से जंगली भैंसे को वश में करते हुए देखा। उस युवती में रूप एवं बल के अनूठे संगम को देखकर राजा उस पर मोहित हो गये। राजा ने निन्नी नामक उस सुंदरी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, जिसे उसने इस शर्त के साथ स्वीकार कर लिया कि विवाह के बाद भी वह राई गांव का ही पानी पीयेगी। शर्त के अनुसार राजा मानसिंह ने राई गांव से महल तक पानी लाने की व्यवस्था की। गूजरी महल के तलघर में वे मिट्टी के पाइप आज भी देखे जा सकते हैं, जिनसे राई गांव का पानी महल तक लाया गया था। राजा मानसिंह एवं मृगनयनी की प्रेम कथा ग्वालियर के इतिहास का सर्वाधिक लोकप्रिय प्रसंग है।

गुजरी महल का बाहरी प्रवेश द्वार काफी बड़ा एवं मेहराबदार है। इससे होकर चढ़ाईदार रास्ते से महल तक पहुंचते हैं। तराशे गये मटमैले बलुआ पत्थर से बना, यह महल 101 मीटर लम्बा और 60 मीटर चौड़ा है। महल का प्रवेश द्वार भी मेहराबदार है। जिसके ऊपर नीले रंग से अरबी एवं फारसी का एक शिलालेख है, जिसमें उल्लेख है कि इस महल का निर्माण सन 1512 ई. में कराया गया था। प्रवेश द्वार से जीना चढ़कर महल के आंगन में पहुंचते हैं। महल का आंगन काफी बड़ा है। आंगन के चारों ओर आयताकार कक्षों की श्रृंखला है। आंगन के नीचे तलघर में दो मंजिले और हैं जिनका उपयोग आमोद प्रमोद के समारोहों के लिये किया जाता होगा। महल की प्रथम मंजिल पर गुम्बदाकार आठ कक्ष बने हैं। कलात्मक तोड़ों पर आधारित छज्जे महल की सुन्दरता को कई गुना बढ़ा देते हैं। हालांकि महल तराशे पत्थरों से बनी सादी संरचना है, पर कहीं-कहीं प्रस्तर पर बड़ी कलात्मक व बारीक पचीकारी का काम भी हुआ है। महल की बाहरी दीवारों को हरे एवं नीले रंगों से चित्रकारी कर सजाया गया है। प्रवेश द्वार के तोड़ों पर हाथी बने हुये हैं। द्वार के ऊपर बाईं तरफ बने झरोखे में भी हाथी की एक विशाल मूर्ति है।

संग्रह:- संग्रहालय में संग्रहीत बहुमूल्य पुरातात्विक धरोहर में पाशाण मूर्तियां, मृण्मूर्तियां, शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, सिक्के, कांस्य मूर्तियां, रंग चित्र, अस्त्र-शस्त्र एवं उत्खनित पुरासामग्री शामिल है।

मूर्ति शिल्प:- प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के अध्ययन की दृष्टि से गुजरी महल संग्रहालय एक आदर्श संग्रहालय है, इस संग्रहालय में मूर्तियों का विपुल भंडार है। इनमें मौर्य, शुंग, गुप्त, प्रतिहा, कच्छपघात, परमार मूर्ति शिल्प के श्रेष्ठतम उदाहरण सम्मिलित हैं। संग्रहालय की अतिविशष्ट एवं उल्लेखनीय मूर्तियों में यक्षमणिभद्र (प्रथम शती ईस्वी), यक्षिणी की मूर्ति (ईसा पूर्व 2री शती), महिषासुरमर्दिनी (5वीं शती), नृत्य एवं संगीत का दृश्य युक्त फलक (गुप्त कालीन) (5वीं शती), नागराज (5वीं शती), योगिनी (7वीं शती), विष्णु विश्वरूप एवं उनके अवतार (10वीं शती) आदि की गणना की जा सकती है। ग्यारसपुर से प्राप्त शालभजिका की मूर्ति इस संग्रहालय की सर्वश्रेष्ठ मूर्ति है। इनके अतिरिक्त विदिशा से प्राप्त सिंह शीर्ष, ताड़पत्र तथा भरहुत से प्राप्त वेदिका के अवशेष भी इस संग्रहालय की अमूल्य निधि है।

मृण्मूर्तियां:- संग्रहालय में पवाया से प्राप्त मृण्मूर्तियों का अच्छा संग्रह है। ये मृण्मूर्तियां तीसरी-चौथी शती ई. की हैं। इनमें अश्वमेध का घोड़ा, बुद्ध, स्त्री एवं पुरुष मस्तक आदि की मृण्मूर्तियां अद्वितीय हैं। इन मृण्मूर्तियों में शरीर सौष्ठव एवं केश विन्यास देखते ही बनता है।

शिलालेख एवं ताम्रपत्र:- संग्रहालय में 70 शिलालेखों, ताम्रपत्रलेखों का दुर्लभ संग्रह है। ये शिलालेख ब्राह्मी, देवनागरी तथा फारसी लिपियों में हैं। इन शिलालेखों के अध्ययन से तत्कालीन इतिहास एवं घटनाओं की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसके ताम्रपत्रों में सुबन्धु-गुर्जरप्रतिहार एवं राजस्थान के राजाओं के ताम्रपत्र संग्रहीत है।

सिक्के:- संग्रहालय में सिक्के भी पर्याप्त मात्रा में संग्रहीत हैं। ये सिक्के ईसा पूर्व तीसरी शती से लेकर 20वीं शती ई. तक के हैं तथा सोने, चांदी, तांबे एवं मिश्र धातु से निर्मित हैं। संग्रहालय के प्रमुख सिक्कों में आहत सिक्के, गुप्तवंश, नागवंश, मुस्लिम, मुगल एवं सिंधिया राजवंश के सिक्के विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

कांस्य प्रतिमाएं:- संग्रहालय में कांस्य प्रतिमाओं का संग्रह भी है। इनमें पंचमुखी गणेश, ताण्डव करते हुए शिव, शेषशायी विष्णु, धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध, महिषासुरमर्दिनी आदि की कांस्य प्रतिमाएं प्रमुख हैं।

चित्र:- संग्रहालय में विश्वविख्यात बाघ की गुफाओं के भित्ति चित्रों की प्रतिलिपियां भी प्रदर्शित हैं। इनको सर्व श्री नंदलाल बोस, भांड, आपटे, अहमद आदि प्रसिद्ध चित्रकारों ने तैयार किया।

इनके अतिरिक्त संग्रहालय में लघु चित्रों का भी संग्रह है। ये लघु चित्र मुगल, राजपूत, कांगड़ा, पहाड़ी एवं ग्वालियर शैलियों में निर्मित हैं। इनमें चंगेज खान का चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अस्त्र-शस्त्र:- संग्रहालय में संग्रहित अस्त-शस्त्रों में विभिन्न प्रकार की बन्दकें, तोप, तलवार आदि हैं।

उत्खनित सामग्री:- संग्रहालय में मोहन-जोदड़ो, विदिशा, उज्जैन, महेश्वर-नावदाटोली, आवरा, पवाया, इन्द्रगढ़ आदि पुरास्थलों पर किये गये उत्खननों में प्राप्त सामग्री भी संग्रहीत है। इनमें मृदभाण्ड, मृण्मूर्तियां, मनके, कार्णाभूषण आदि प्रमुख हैं। कुछ मृण्मूर्तियां अभिलिखित भी हैं।

दीर्घाएं:- संग्रहालय में बीस दीर्घाएँ हैं। इन दीर्घाओं में भारतीय धर्म, दर्शन, चिंतन, संस्कृति एवं स्वर्णिम अतीत की झांकी प्रस्तुत करने वाले बहुमूल्य पुरावशेषों को प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय में प्रवेश करते ही संग्रहालय के संस्थापक स्वर्गीय महाराजा माधवराव सिंधिया की संगमरमर की मूर्ति प्रदर्शित की गई है।

दीर्घा क्र.1:- इस दीर्घा का नाम "स्वर्ण जयंती दीर्घा" है। देश की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के गौरवशाली अवसर पर इसकी स्थाना की गई है। इस दीर्घा में स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित दुर्लभ दस्तावेजों एवं स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों के छायाचित्र प्रदर्शित हैं। मौलिक दस्तावेज भोपाल, नागपुर, रीवा एवं ग्वालियर के अभिलेखागारों में सुरक्षित है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू के पैरों की छाप की फाइबर से तैयार की गई अनुकृति भी दीर्घा में प्रदर्शित है।

दीर्घा क्र.2:- इन दीर्घा में प्रदर्शित पुरावशेषों में उदयगिरि एवं बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त दूसरी सती ई. पूर्व के मकर गरुड़ एवं सिंह स्तंभ शीर्ष तथा पवाया से प्राप्त सूर्य एवं ताड़ वृक्ष की पांचवीं शती ई. की मूर्तियां महत्वपूर्ण हैं। प्रदर्शित दो सिंह स्तंभ शीर्षों में एक चौकी पर चार सिंह आपस में पीठ सटाए उकड़ एवं दूसरे पर एक सिंह बैठा हुआ है। पवाया से प्राप्त सूर्य की मूर्ति अपने आप में अनूठी एवं दुर्लभ है। इसमें सूर्य की आकृति दो पार्श्वों में अंकित है।

दीर्घा क्र.3:- इस दीर्घा में सिक्के, ताम्र मूर्तियां एवं बाघ की गुफाओं में बने भित्ति चित्रों की अनुकृतियां प्रदर्शित हैं। सिक्कों में आहत (पंचमार्क), इंडो-सीथियन, नागवंश के राजाओं, गधैया, दिल्ली के सुल्तानों, मुगल बादशाहों, मालवा के सुल्तान एवं ओरछा के बुंदेला राजाओं के सिक्के प्रदर्शित हैं। प्रदर्शित कांस्य मूर्तियों में शिव के विविध रूप, विष्णु, दत्तात्रेय, बोधिसत्व आदि की मूर्तियां हैं। बाघ के चित्रों की अनुलिपियों में बोधिसत्व, जुलस दृश्य, केरुणा का दृश्य, संगीत समारोह, नायिका, गंधर्व आदि के चित्र हैं। ये अनुलिपियां सर्व श्री नंदलाल बोस, भांड, आपटे, अहमद आदि प्रसिद्ध चित्रकारों ने तैयार की हैं।

दीर्घा क्र.4:- यह विशिष्ट प्रतिमा दीर्घा है। इस दीर्घा में गुप्त, प्रतिहार, परमार एवं कच्छपघात कला शैलियों की श्रेष्ठतम मूर्तियां प्रदर्शित हैं। ये मूर्तियां शैव एवं वैष्णव सम्प्रदाय से संबंधित हैं। शैव मूर्तियों में कोटा से प्राप्त स्कन्ध-कार्तिकेय, उदयपुर से प्राप्त शिव, सुहानिया से प्राप्त वीणाधर शिव, उज्जैन से प्राप्त नटराज, विदिशा से प्राप्त उमा-महेश्वर, हेरम्ब गणेश की मूर्तियां महत्वपूर्ण हैं। वैष्णव मूर्तियों में वामन, शेषशायी विष्णु एवं घुसई से प्राप्त हरिहर की मूर्तियां भी विशिष्ट हैं। सुहानिया से प्राप्त बृह्मा, पार्वती, गणेश एवं नंदी कच्छपघात कालीन श्रेष्ठतम मूर्तियां हैं। नायिकाओं में घुसई से प्राप्त नायिका एवं विदिशा से प्राप्त स्खलितवसना नायिका की मूर्तियां कला का उत्कृष्ट नमूना है। बदोह (विदिशा) से प्राप्त काशीपट्ट बहुत ही दुर्लभ मूर्तिखण्ड है।

दीर्घा क्र.5:- इस दीर्घा में प्रदर्शित पुरावशेषों में बेसनगर से प्राप्त किसी बौद्ध स्तूप की वेदिका का ऊपरी भाग उष्णीय अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसमें दोनों ओर बौद्ध धर्म से संबंधित घटनाओं को उकेरा गया है। एक ओर एक सिरे पर श्वेतकेतु हाथी को कमल धारण करते हुये दिखाया गया है। यह दृश्य बौद्ध जन्म को प्रदर्शित करता है। दूसरे सिरे पर बना स्तूप बुद्ध के महापरिनिर्वाण को दर्शाता है। दूसरी ओर के दृश्य में हाथी पर सवार राजा एवं घोड़े पर सवार युवराज को दिखाया गया है। इस दृश्य की पहचान इस प्रकार की गई है- बेसनगर का राजा बुद्ध की अस्थियां ले जा रहा है। ये अस्थियां बेसनगर में निर्मित स्तूप में रखी गई। यह उष्णीष इसी स्तूप की वेदिका का है। इस पर उत्कीर्ण लेख द्वितीय-प्रथम शती ईसा पूर्व की ब्राह्मी लिपि में है। उष्णीष के अलावा वेदिका की सूची भी दीर्घा में प्रदर्शित है। पवाया से प्राप्त मणिभद्र यक्ष की मूर्ति भी काफी महत्वपूर्ण है। मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख में कुषाण वंश के स्वामी शिवनंदिन के शासन का चौथा संवत् वर्ष अंकित है।

दीर्घा क्र.6:- इस दीर्घा में बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गुप्तकालीन महिषासुरमर्दिनी, नृसिंह, आवक्ष विष्णु, सप्त मातृकाएं, एक मुखी शिवलिंग एवं कार्यात्सर्ग मुद्रा में जैन तीर्थंकर की मूर्तियां प्रदर्शित हैं। ये मूर्तियां गुप्तकालीन चौथी-पांचवी शती ई. की मूर्तिकला के सुंदर नमूने हैं। मौसल शरीर सौष्ठव, सुंदर केश सज्जा इन मूर्तियों की सबसे बड़ी विशेषता है।

सिरदल:- दीर्घा क्र.6 एवं 7 के बीच में पवाया से प्राप्त पांचवी शती ई. का विष्णु मंदिर का खण्डित सिरदल प्रदर्शित है। इसमें सामने की ओर बाईं तरफ नृत्य एवं संगीत सभा का दृश्य उकेरा गया है। इसमें विभिन्न वाद्ययंत्र बजाती महिला वादक दिखाई गई हैं। बीच में एक नर्तकी संगीत की स्वर लहरियों पर मोहक मुद्रा में नृत्य कर रही है। दासियों के साथ बैठी रानी नृत्य एवं संगीत का आनंद ले रही है। वाद्ययंत्रों में सप्ततंत्री वीणा (वियन्ची), बांसुरी, मदंग एवं ढपली आदि शामिल है। दाहिनी ओर यज्ञ का दृश्य है। इसके आगे राजा बलि विष्णु के वामन अवतार को तीन पग धरती का दान दे रहे हैं। राजा से दान मिलने पर विष्णु अपने असली रूप में आकर पहला पग उठाते हैं जो अंतरिक्ष तक पहुंच जाता है। यह वामन अवतार का त्रिविक्रम रूप है। ऊपरी भाग में छोटे-छोटे वर्गाकार खानों में आठ नृत्यांगनायें नृत्य की अलग-अलग मुद्राओं में हैं। दूसरी तरफ समुद्र मंथन का दृश्य एवं स्कंद की मूर्तियां उत्कीर्ण है।

दीर्घा क्र.7:- इस दीर्घा में पवाया (प्राचीन नाम पद्मावती) से प्राप्त बलराम एवं त्रिविक्रम, तुमैन (प्राचीन तुम्बवन) से प्राप्त स्कंद एवं गंगा, तेरही (प्राचीन तेरम्बी) से प्राप्त कुबेर, मंदसौर (प्राचीन दशपुर) से प्राप्त द्वारपाल की मूर्तियां प्रदर्शित हैं। ये मूर्तियां गुप्त एवं उत्तर गुप्त कालीन हैं। धन के देवता कुबेर के दायें हाथ में सुरापात्र एवं बायें हाथ में धन की थैली है।

दीर्घा क्र.8:- इस दीर्घा में कोटा जिला शिवपुरी से प्राप्त सप्तमातृका, गजासुर वध शिव, बदोह से प्राप्त कृष्ण जन्म, विष्णु के कूर्म एवं वराह अवतारों, बेसनगर से प्राप्त चतुर्मुखी ब्रह्मा एवं ग्यारसपुर से प्राप्त चतुर्भुजी अम्बिका की मूर्तियां प्रदर्शित हैं। सप्तमातृकाओं की मूर्तियां कला एवं सौंदर्य की दृष्टि से अद्वितीय हैं। गजासुर वध की मूर्ति भी दुर्लभ है। इसमें शिव के 16 हाथ हैं। साधारणतया इस तरह की मूर्तियां में 10 हाथ ही होते हैं। विशाल कृष्णा जन्म की मूर्ति न केवल इस दीर्घा की बल्कि संग्रहालय की महत्वपूर्ण मूर्तियों में से एक है। ये मूर्तियां 8वीं से 10 वीं शती ई. की है।

दीर्घा क्र.9:- इस दीर्घा में बदोह से प्राप्त विष्णु के अवतारों यज्ञ वहार, नृसिंह, वामन, राम, बलराम, सर्वतोभद्रिका, कुबेर, अष्टदिक्पाल, तेरही से प्राप्त महिषासुरमर्दिनी, बाघ जिला धार से प्राप्त माता शिशु, पद्मावती से प्राप्त कल्याणसुंदर की दो एवं सुहानिया से प्राप्त मय एवं वायु एवं पद्मावती से प्राप्त 16 भुजी गणेश की मूर्ति प्रदर्शित है। इनमें यज्ञवराह की विशालकाय मूर्ति, सर्वतोभद्रिका जिसमें गरूडासीन विष्णु, त्रिविक्रम,

नृसिंह एवं वराह की मूर्तियां हैं तथा कल्याणसुंदर की मूर्तियां दीर्घा की विशिष्ट मूर्तियां हैं। ये मूर्तियां 9वीं शती ई. की है।

दीर्घा क्र.10:- इस दीर्घा में लघु चित्रों का प्रदर्शन किया गया है। ये लघु चित्र राजपूत, मुगल, कांगड़ा, पहाड़ी एवं ग्वालियर चित्र शैलियों के हैं। इन चित्रों में चंगेज खान, बाबर, हुमायूँ, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब, बीरबल, नूरजहां, मुमताज, राजा मानसिंह के दरबार एवं शिकार का दृश्य, हम्मरिदेव, रानी लक्ष्मीबाई, सिंधिया महाराजाओं एवं राज परिवार के अन्य सदस्यों के चित्र प्रदर्शित हैं। विभिन्न चित्र शैलियों के चित्र इस दीर्घा में एक साथ प्रदर्शित किये जाने के कारण दर्शक इनका तुलनात्मक अध्ययन सुगमता से कर सकते हैं।

दीर्घा क्र. 11:- इस दीर्घा में पवाया (पद्मावती) से प्राप्त मृण्मूर्तियां प्रदर्शित है। यह पुरा स्थल ग्वालियर जिले की डबरा तहसील मुख्यालय से लगभग 20 कि. मी. दूर स्थित है। विष्णु पुराण, भवभूतिकृत 'मालती माधव', बाणभद्रकृत 'हर्ष चरित' एवं भोजकृत 'कंठोभरण' नामक ग्रन्थों में पद्मावती का उल्लेख हुआ है। नाग राजाओं की यह राजधानी थी। पार्वती एवं सिंध नदियों के संगम पर स्थित पवाया के पुराने टीलों की खुदाई श्री गर्दे ने 1924-25, 1933-34 तथा 1941 के वर्षों में की थी। खुदाई में मिली मृण्मूर्तियों को संग्रह कर गुजरी महल संग्रहालय में रखा गया। इसी संग्रह से चुनी गई कुछ मृण्मूर्तियां इस दीर्घा में प्रदर्शित है। इनमें राम सीता की मृण्मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नारियों की मूर्तियों में सुन्दर केश विन्यास देखते ही बनता है। सांचे में ढालकर बनाई गई इन मृण्मूर्तियों में गोल चेहरे एवं खुली हुई आंखें हैं। मुख पर हास्य एवं दुःखके भावों का सजीव रूपांकन है। ये मृण्मूर्तियां नाग एवं गुप्तकालीन कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

दीर्घा क्र. 12:- इस दीर्घा में ग्वालियर, विदिशा एवं पद्मावती से प्राप्त जैन तीर्थंकर आदिनाथ, पद्मनाथ, पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, धर्मनाथ एवं चंद्रप्रभु की मूर्तियां प्रदर्शित है। ये मूर्तियां ध्यान एवं कार्यात्सर्ग मुद्रा में हैं। पादपीठ पर तीर्थंकरों के लक्षण खुदे हुये हैं जिनसे इनकी पहचान होती है। कुछ मूर्तियों पर लेख भी खुदे हैं। मुख्य रूप से ये मूर्तियां 11-12 वीं एवं 15-16 वीं शती ई. की है।

दीर्घा क्र. 13:- इस दीर्घा में वैष्णव मूर्तियों का प्रदर्शन किया गया है। इनमें ग्वालियर किले से प्राप्त स्थानक विष्णु, शेषशायी विष्णु, बलराम, कच्छप अवतार, सुहानिया से प्राप्त नृवराह, नृसिंह एवं राम सीता सहित चंदेरी एवं नरवर से प्राप्त वामन अवतार, सुनारी से प्राप्त योगनारायण विष्णु एवं गरूडासीन विष्णु की मूर्तियां हैं। ये मूर्तियां 9वीं शती ई. से 12 वीं शती ई. के मध्य की बनी हुई हैं। स्थानक विष्णु की मूर्तियों के परिकर में दशावतारों का भी अंकन है। शेषशायी-विष्णु की मूर्ति में शयन करते हुये विष्णु, विष्णु के पैर दबाती लक्ष्मी के साथ ब्रह्मा, गणेश, नवग्रह एवं मधुकैटभ नाम के असुर भी उत्कीर्ण हैं। बलराम की मूर्ति में दायें हाथ में चषक है एवं बायाँ हाथ कमर पर टिका (कटयावलम्बित मुद्रा) है। राम सीता की युगल मूर्ति भी उल्लेखनीय है। योगनारायण की मूर्ति के परिकर में ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं दशावतार भी उकेरे गये हैं। पॉलिशदार गरूडासीन विष्णु की मूर्ति के पादपीठ पर उत्कीर्ण लेख में विक्रम संवत् 1242 (1165 ई.) का उल्लेख है।

दीर्घा क्र. 14:- इस दीर्घा में नरेसर से प्राप्त मातृका (योगिनी), ग्यारसपुर से प्राप्त गजासुरवध, पार्वती सुहानिया से प्राप्त वैद्यनाथ, पार्वती, उदयपुर से प्राप्त नटराज एवं विदिशा से प्राप्त उमा-महेश्वर की मूर्तियां प्रदर्शित है। मातृकाओं में श्री इन्द्राणी, श्री कुबेरी, श्री वैष्णवी, श्री वारूणी देवी, श्री वाराही, श्री माधाली, श्री याम्या, श्री देवी निवाऊ, श्री उमा देवी की मूर्तियां शामिल हैं। मातृकाओं की इन मूर्तियों में उनके वाहन भी बने हैं। मूर्ति के पादपीठ पर मातृका का नाम भी लिखा है। दीर्घा की सबसे

महत्वपूर्ण मूर्ति गजासुर वध शिव की है। इस विशाल मूर्ति में शिव चतुर्भुजी हैं जबकि सामान्य तौर पर गजासुर वध मूर्तियों में शिव की दस भुजाएँ होती हैं। शिव के गले में मुंडास्थि माला (नर मुंड एवं अस्थियों की माला) है तथा मुख पर “विकट हास्य” का भाव है। शिव के पैरों के पास चामुण्डा नृत्य करते हुए दिखाई गई है। पार्वती, नटराज एवं उमा-महेश्वर की मूर्तियाँ भी मूर्ति शिल्प की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। प्रदर्शित मूर्तियाँ 11वीं-12वीं शती ई. की है।

दीर्घा क्र. 15:- इस दीर्घा में पढ़ावली एवं सुहानिया से प्राप्त गणेश कार्तिकेय की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। चतुर्भुजी एवं अष्टभुजी गणेश की मूर्तियाँ आसनस्थ एवं नृत्य मुद्राओं में हैं। मुद्रा के लिहाज से ग्वालियर के किले से प्राप्त चतुर्भुजी गणेश की मूर्ति अपने आप में अनूठी है। चतुर्भुजी स्थानक कार्तिकेय की मूर्ति में पैरों के पास उनका वाहन मोर भी है। प्रदर्शित मूर्तियाँ 9वीं-10वीं शती ई. की है।

दीर्घा क्र. 16:- इस दीर्घा में सुहानिया से प्राप्त अग्नि, सूर्य (स्थानक), ब्रह्मणी, सरस्वती, पढ़ावली से प्राप्त चतुर्मुखी शिव, सूर्य (आसनस्थ) तथा बाघ से प्राप्त ब्रह्मा की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। सुहानिया से प्राप्त एक अग्नि की मूर्ति की पहचान को लेकर विद्वानों में मतभेद है। सामान्यतः अग्नि की मूर्तियों में सिर पर जटा मुकुट एवं मुख पर दाढ़ी होती है। इस मूर्ति में सिर पर करंड मुकुट एवं मुख पर दाढ़ी नहीं है। साथ ही ऊपरी हाथों में गदा एवं पद्म हैं। ये दोनों आयुध विष्णु के हैं किन्तु निचले हाथ कमंडलु और पैरों के पास उत्कीर्ण वाहन इस मूर्ति के अग्नि होने की पुष्टि करते हैं। अतः इस मूर्ति को अग्नि एवं विष्णु के सम्मिलित रूप अग्नि नारायण की मूर्ति माना गया है। सुहानिया से प्राप्त सूर्य की मूर्तियाँ समपाद स्थानक (खड़े हुये) एवं पढ़ावली से प्राप्त सूर्य की मूर्तियाँ समपाद आसनस्थ (बैठे हुये) मुद्रा में हैं। चतुर्मुखी शिव की मूर्तियों में एक मुख अधोरूप में है। इसमें शिव को कपाल से सुरापान करते हुये दिखाया गया है। दीर्घा में प्रदर्शित मूर्तियाँ 11वीं-12वीं शती ई. की है।

दीर्घा क्र. 17 एवं 18:- ये दोनों अभिलेख दीर्घाएँ हैं। इन दीर्घाओं में 28 अभिलेख प्रदर्शित हैं। ये अभिलेख द्वितीय शती ईसा पूर्व से 17 वीं शती ई. तक के हैं। इनकी भाषा प्राकृत, संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी, गुप्तकालीन ब्रह्मी, देवनागरी एवं अरबी, फारसी हैं। सबसे प्राचीन अभिलेख दूसरी शती ईसा पूर्व का महाराजा भागवत का स्तंभ लेख है जो बेसनगर विदिशा से प्राप्त हुआ है। इसके अलावा चन्द्रगुप्त द्वितीय का मंदसौर से प्राप्त, कुमारगुप्त के शासन काल का तुमैन से प्राप्त, नरवर्मन के शासन काल का मंदसौर से प्राप्त, मिहिर भोज का सागर ताल ग्वालियर से प्राप्त, विक्रम सिंह का दबकुंड से प्राप्त, आसल्ल देव का नरवर से प्राप्त, महाराजा अभय देव का लखारी से प्राप्त, प्रतिहार नरेश कक्कुक का ग्वालियर से प्राप्त, परमार नरेश उदयादित्य का उदयपुर से प्राप्त, नलपुर के राजा अधिकदेव का सुरवाया से प्राप्त, शुल्की वंश के राजा नृसिंह का मासेर से प्राप्त, मुहम्मद शाह खिलजी के शासन काल का नडेरी (गुना) से प्राप्त, मांडू के हुशंगशाह के शासन काल का सिंहपुर (गुना) से प्राप्त एवं आलमगरी के शासन काल का चंदेरी से प्राप्त अभिलेख ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन अभिलेखों से तत्कालीन इतिहास की महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक जानकारी मिलती है साथ ही इनसे लिपि के क्रमिक विकास के अध्ययन में भी सहायता मिलती है। अभिलेखों के अलावा इन दीर्घाओं में ब्राह्मी लिपि के उद्भव एवं विकास लेखन कला की प्राचीनता, प्राचीन लेखन सामग्री, इस्लामिक सुलेखन आदि की जानकारी भी प्रस्तुत की गई है।

नीलांबर दीर्घा:- महल के आंगन में खुले आकाश के नीचे बनाई इस दीर्घा को नीलांबर दीर्घा का नाम दिया गया है। इस दीर्घा में सबसे पहले विद्या की देवी सरस्वती तथा विध्वननाशक, मांगल्य की वर्षा करने

वाले देवता गणेश की मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई हैं। इनके बाद पंचदेवोपासना के देवताओं शिव, विष्णु, सूर्य, गणेश, दुर्गा (महिषासुरमर्दिनी) की मूर्तियाँ हैं। पंचदेवोपासना के देवताओं के बाद त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु एवं उनके अवतार, शिव एवं उनके परिवार देवताओं की मूर्तियाँ हैं। इनके आगे दिक्पाल, तीर्थकर, जैन शासन यक्ष, यक्षी एवं नायिकाओं की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। नायिकाओं की मूर्तियों में अलसनायिका, सद्यस्नाता (नहाने के बाद बाल सुखाती नायिका) की मूर्तियाँ शामिल हैं। संग्रहालय (महल) के आंगन में नीलांबर दीर्घा के अलावा कई सुंदर अलंकृत स्तंभ, स्थापत्य खंड एवं मूर्तियाँ भी प्रदर्शित हैं। यहां प्रदर्शित प्रतिहार कालीन दो लघु मंदिर बड़े महत्वपूर्ण हैं। इन्हें देखकर प्रतिहार कालीन मंदिरों की विशेषताओं को आसानी से समझा जा सकता है।

अस्त्र-शस्त्र दीर्घा:- यह दीर्घा महल के तलघर में बनाई गई है। इसमें पाशाणयुगीन मानव द्वारा उपयोग में लाये गये पत्थर के हस्त कुठार, कुल्हाड़ी, खुरचनी आदि प्रदर्शित किये गये हैं। इन हथियारों को बनाने की विधियों को चित्रों द्वारा दर्शाया गया है। इनके अलावा दीर्घा में तलवारें, कवच, ढाल, भाला, गदा तथा कई तरह की बंदकें, तमन्चे, तोपें आदि भी प्रदर्शित हैं। अस्त्र-शस्त्रों के साथ सिक्कों के छायाचित्र, पाषाण मूर्तियाँ, धातु मूर्तियाँ एवं लघु चित्र भी प्रदर्शित हैं जिनमें तरह-तरह के हथियारों का रूपांकन है।

संग्रहालय का गौरव:- गूजरी महल संग्रहालय अपने संग्रह की दुर्लभ मूर्तियों के कारण देश विदेश में अपनी एक अलग पहचान बनाये हुये है। विदेशों में आयोजित भारत महोत्सवों में इस संग्रहालय की कई मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई हैं। ये मूर्तियाँ मूर्ति-विज्ञान एवं शिल्प सौन्दर्य की दृष्टि से विलक्षण मूर्तियाँ होने से अनंतराष्ट्रीय महोत्सवों में समय-समय पर भेजी गई हैं। इन मूर्तियों ने गूजरी महल संग्रहालय की कीर्ति देश की सीमाओं के बाहर विदेशों में भी फैलाई है। निःसंदेह ये मूर्तियाँ संग्रहालय का गौरव है। ऐसी कुछ विशिष्ट मूर्तियों का विवरण निम्नानुसार है:-

शाल भजिका:- यह अद्वितीय मूर्ति गूजरी महल संग्रहालय की पहचान बन गई है। शालभजिका की यह मूर्ति विदिशा जिले के ग्यारसपुर नामक स्थान से प्राप्त हुई थी। दर्भाग्यवेश मूर्ति अपने पूर्ण रूप से नहीं है। मूर्ति के हाथ एवं पैर टूटे हुए हैं। खण्डित अवस्था में भी यह मूर्ति शिल्प कला का अनुपम उदाहरण है। नारी सौन्दर्य की सभी परिभाषायें एवं उपमायें इसके सामने फीकी पड़ जाती हैं। मुख पर विद्यमान मंद हास्य, केश सज्जा, आभूषण एवं अधोवस्त्र पर बने डिजाइन मूर्ति को विशिष्टता प्रदान करते हैं। मूर्ति का निर्माण काल 10वीं शती ई. है। यह मूर्ति फ्रांस एवं ब्रिटेन में आयोजित भारत महोत्सवों में प्रदर्शित की गई है।

गजासुर वध:- गजासुर वध की यह मूर्ति ग्यारसपुर से प्राप्त हुई है। इस मूर्ति में शिव को गजासुर नामक असुर को मारते हुए दिखाया गया है। मूर्ति का ऊपरी भाग खण्डित है। चतुर्भुजी शिव के मुख पर विकट हास्य के भाव हैं। शिव अपने शरीर पर मुण्डमाला धारण किये हुए हैं। पैरों के पास चामुण्डा नृत्य मुद्रा में है। सिर पर जटा जूट एवं अन्य अलंकरण हैं। प्रतिमा के परिकर में रत्न पुष्प की श्रृंखला है। यह मूर्ति 10वीं शती ई. की है। इसे फ्रांस एवं ब्रिटेन में आयोजित भारत महोत्सवों में प्रदर्शित किया गया है।

नटराज:- नटराज की यह मूर्ति (उदयपुर) से प्राप्त हुई है। यह किसी मंदिर की शुकनासिका है जिसमें 10 भुजी शिव नृत्य मुद्रा में उत्कीर्ण है। शास्त्रों में नृत्यरत शिव को नटराज कहा गया है। यह मूर्ति 10वीं शती ई. की है। इसे फ्रांस एवं ब्रिटेन में आयोजित भारत महोत्सवों में प्रदर्शित किया गया है।



Photo - Kamal Guda

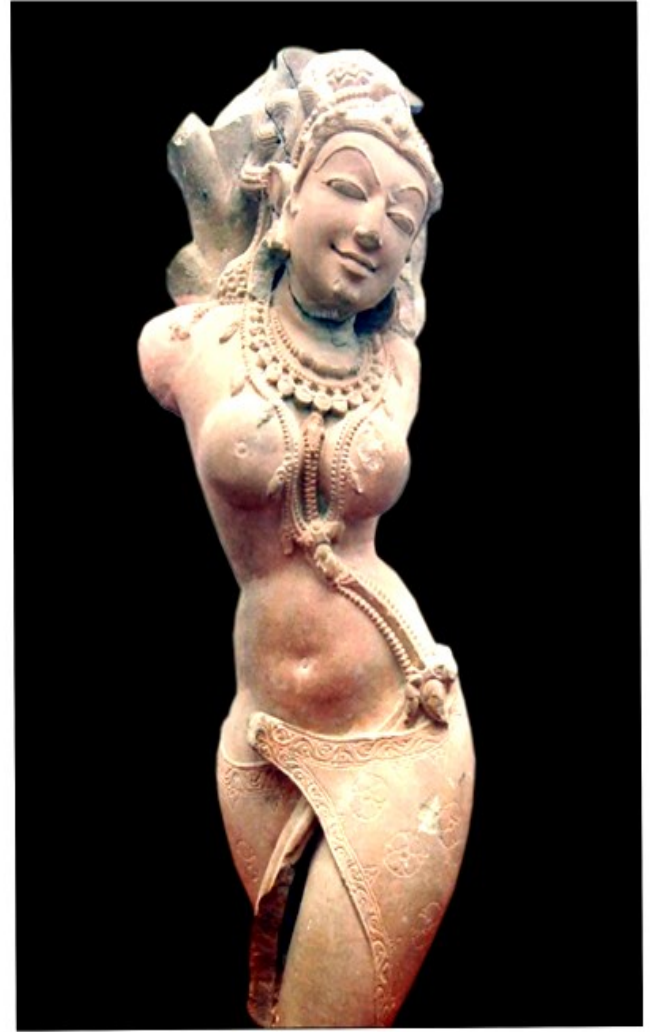


Photo - Kamal Guda

शाल भंजिका

संदर्भ :-

1. स्वयं के सर्वेक्षण के आधार पर तैयार किया .